वार्षिक 150/- रुपये मई 2025 वर्ष 27 अंक 07 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

# गोसम्पदा

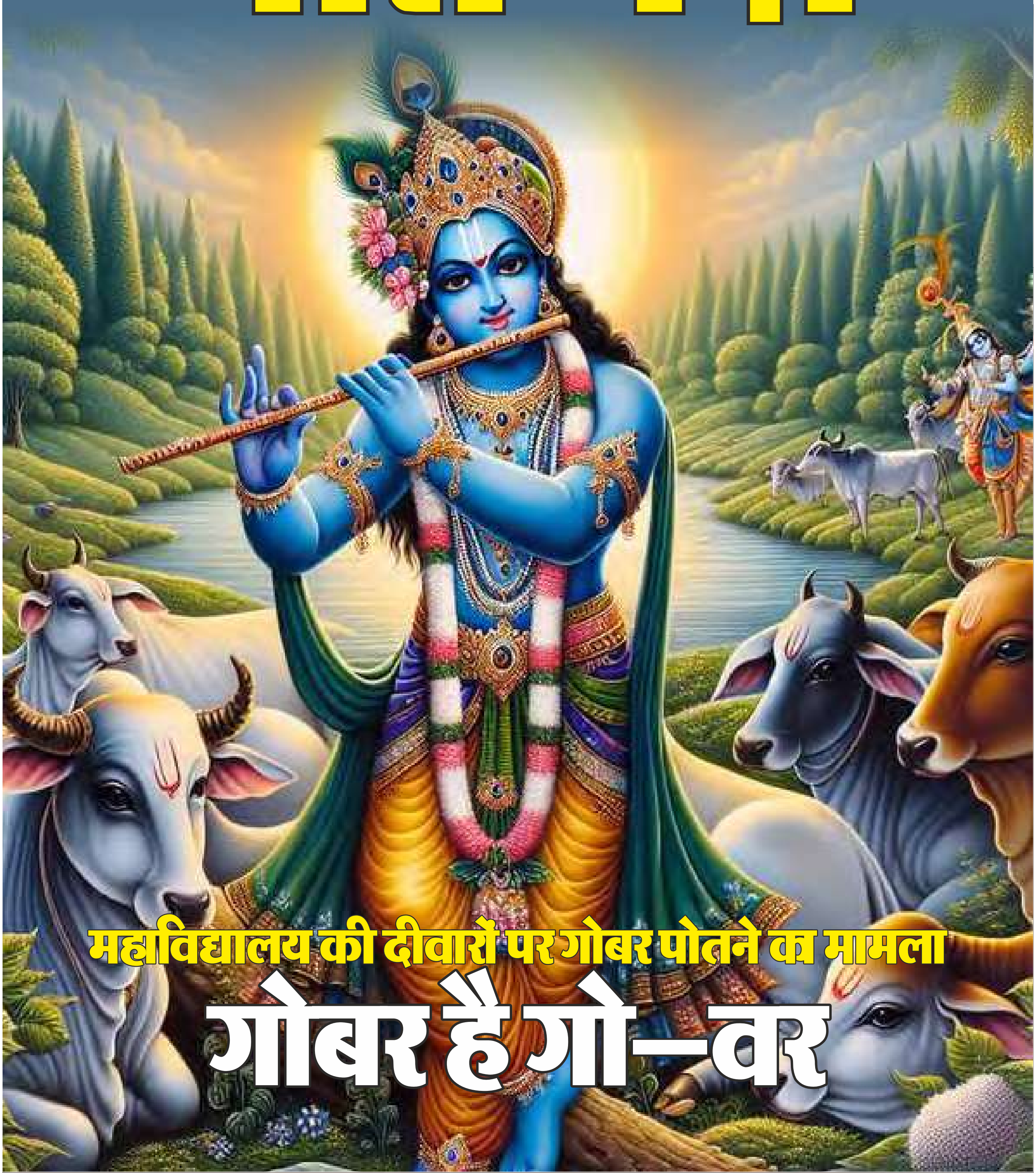

## महाविद्यालय की दीवारों पर गोबर पोतने का मामला

# गोबर है गो–वर

सम्पादकीय

## महाविद्यालय की दीवारों पर गोबर पोतने का मामला

# गोबर है गो-वर

दिल्ली विश्वविद्यालय के लक्ष्मी बाई कालेज की प्राचार्या डॉ. प्रत्यूषा वत्सल जी ने गत माह ग्रीष्म ऋतु को दृष्टिगत रखते हुए कक्षाओं को ठंडा रखने के उद्देश्य से भारतीय परम्परानुसार कक्षाओं की दीवारों पर गोबर की पुताई स्वयं की और करवाई भी, जो पूर्णता वैज्ञानिक है। वास्तव में गोबर में पाये जाने वाले फाइबर और लिग्निन पदार्थ तापरोधी होते हैं, जो ग्रीष्मकाल में घरों को ठंडा रखने का कार्य करते हैं। उदाहरणस्वरूप **रजाई** में तापरोधी गुण होता है, जो शीत (ठंड) से मानव की रक्षा करता है। इसी प्रकार शीतल जल की बोतलों को 'ठंडा' रखने के लिए उसको चारों ओर से कॉटन भरे हुए 'कपड़े (वस्त्र) से लपेट देते हैं, जिससे काफी समय तक बोतलों का पानी ठंडा बना रहता है। वस्तुतः दोनों वस्तओं मे कॉटन (फाइबर) का उपयोग किया जाता है, जो **तापरोधी** होता है, जिसके कारण रजाई गर्म और ठंडे जल की बोतलें ठंडी (शीतल) बनी रहती हैं। इसी प्रकार गोबर में भी **फाइबर** एवं **लिग्निन** तत्व पाये जाते हैं जो घरों को ठंडा (शीतल) बनाए रखने का कार्य करते हैं।

सच तो यह है कि **गोबर विलक्षण –अलौकिक गुणों की खान** है। इसीलिए आदिकाल से ही हिन्दुओं के सभी धार्मिक कार्यों–अनुष्ठानों में गोबर का उपयोग किया जाता रहा है, और अभी भी किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि हमारे ऋषि–मुनि इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर अपनी पर्ण कुटियों को गोबर से लीप–पोतकर स्वच्छ व तापरोधी बनाकर रखते थे और गोबर–रस के सेवन से ही पर्याप्त बी–12 विटामिन प्राप्त कर स्वस्थ रहते हुए दीर्घायु प्राप्त करते थे। वास्तव में भोजन का आवश्यक तत्व विटामिन बी–12 शाकाहारी भोजन में न के बराबर होता है, जबकि गाय (गोमाता) की बड़ी आंत में इसकी उत्पत्ति प्रचुर मात्रा में होती है, परंतु वहां इसका आचूषण नहीं हो पाता है। अतः यह बिटामिन गोबर के साथ बाहर आ जाता है। और यह सर्वविदित है कि हमारे ऋषि–मुनि वस्तु की व्यावहारिक उपयोगिता जान –समझकर उसे धार्मिक स्वरूप दे दिया करते थे ताकि वह समाज में रूढ़ हो जाय। इसीलिए भारतीय संस्कृति में पवित्रीकरण हेतु विभिन्न अवसरों पर गोबर की उपयोगिता भी प्रतिपादित की गई है।

अमरीका, रूस, इटली आदि देशों के वैज्ञानिकों के अनुसार गोबर के समान सहज – सुलभ कीटाणुनाशक द्रव्य दूसरा कोई नहीं है। आणविक विकिरण का प्रतिकार करने में गोबर से पुती दीवारें पूर्ण सक्षम हैं। इसी प्रकार ताजे गोबर से तपेदिक एवं मलेरिया के कीटाणु तुरंत मर जाते हैं। प्राथमिक अवस्था के कीटाणु तो गोबर की गंध से ही मर जाते हैं। इस विशेष गुण के कारण इटली के अधिकांश **सैनेटोरियमों** में गोबर का ही उपयोग किया जाता रहा है। अभी भी इटली में हैजा या अतिसार के रोगी को पानी में ताजा गोबर घोलकर पिलाते हैं और वहां जिस तालाब के पानी में हैजे के जन्तु उत्पन्न हो जाते हैं उसमें गोबर डालते हैं। ध्यान रहे, गोबर डालने से हैजे के जन्तु तत्काल मर जाते हैं। इसके अलावा गोबर से फोड़ा, फुंसी, घाव, दंश, चक्कर आना आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

वैज्ञानिकों द्वारा यह भी सिद्ध किया जा चुका है कि गोबर– गोमूत्र में पोटाश, सोड़ा, मैगनेशिया, लोह भस्म, चूना, गंधक, फास्फोरस, अमोनिया आदि अनेक तत्व मिश्रित रहते हैं, जो उड़कर वायु को शुद्ध करते हैं। पोटाश विषनाशक है, मल–मूत्र को शुद्ध करता है, जठराग्नि को प्रदीप्त करता है, उदर रोग एवं शीतज्वर को दूर करता है। सोड़ा अन्न को पचाता है तथा मल की शुद्धि भी करता है। मैगनेशिया वात–पित्त, अम्ल प्रमेह और रक्त दोषों को दूर करता है और बल प्रदान करता है, क्योंकि यह अभ्रक का मूल तत्व है। चूना का पानी दूध के भारीपन को दूर कर साम्यावस्था में लाता है, इसलिए माता के दूध के अभाव में शिशु को चूना मिश्रित दूध देने से अपच संबंधी विरेचन आदि दोष उत्पन्न नहीं हो पाते हैं। लोह–भस्म वात, कफ, गुल्म, बवासीर, उदर रोग, एवं रक्त दोष को नष्ट करती है। इसी प्रकार गंधक, अमोनिया एवं फास्फोरस में आश्चर्यजनक रोगनाशक विलक्षण गुण विद्यमान हैं। इसके अलावा भूमि की नष्ट होती उत्पादन शक्ति को पुनर्जीवित करने के लिए गोमूत्र से सने गोबर को भूमि में डालने से भूमि की उत्पादन शक्ति बढ़ती है, जो प्रत्यक्षतः सिद्ध है। गोबर की खाद से **कपास** की खेती सर्वोत्तम होती है। इसी तरह गेहूँ की वृद्धि से अन्न की वृद्धि और कपास की वद्धि से वस्त्र की वृद्धि होने से हमारी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, जिससे **लक्ष्मी (धन)** 'की प्राप्ति प्रत्यक्ष ही देखने को मिलती है। अतः ''**गोमये वसते लक्ष्मीः** '' उक्ति सुसिद्ध है। इस दृष्टि से भारत में गोबर से कागज बनाने के शोध का कार्य करने वाली विशाखापट्टनम निवासी डॉ. अनुराधा का कहना है कि यह काम यदि बड़े पैमाने पर किया जाये तो एक दिन गाय का गोबर 100 रु. किलो बिकेगा। यथार्थ में इस क्रांति के उपरांत गोमाता देश की अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ स्तंभ बन जाएगी। और जिस दिन कागज बनाने में गोबर का उपयोग होने लगेगा उस दिन सारा देश कहेगा – ''**यह गोबर नहीं वास्तव में गो–वर (गोमाता का वरदान) है**'', जिससे देश समृद्धशाली–वैभवशाली बनेगा। **वेदों के अनुसार–**

**''लक्ष्मीश्च गोमये नित्यं पवित्रा सर्वमंगला। गोमयालेपनं तस्मात् कर्तव्यं पांडुनंदन।।**

अर्थात परम पवित्र गोबर (गोमय) में सर्वमंगलमयी श्री लक्ष्मीजी नित्य निवास करती हैं, इसलिए गोबर से लीपना–पोतना चाहिए। अंत में उक्त पवित्र–पावन कार्य के लिए डॉ. प्रत्यूषा जी को हार्दिक साधुवाद।

**(सम्पादक)**

# गोसम्पदा

वर्ष - 27 अंक-07 मई - 2025 पृष्ठ - 28

**संरक्षक :**
**हुकुमचंद सावला जी**

**दिनेश उपाध्याय जी**
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

**सम्पादक : देवेन्द्र नायक**
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

**परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी**
मो. : 9838900596

**प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी**
मो. : 9810055638

**प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी**
9811111602

**व्यवस्थापक : रामानन्द यादव**
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

**साज-सज्जा : सुमन कुमार**

**वैधानिक सूचना**

'गोसम्पदा' से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

**सहयोग राशि**

एक प्रति : रु. 30/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

**अनुक्रमणिका**


| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| बढ़ते पेस्टिसाइड्स का सेहत पर प्रभाव और बीमारियों के प्रसार में इनका अप्रत्यक्ष योगदान | 04 |
| गोमाता : मानव मूल्यों की रक्षक | 06 |
| पंचगव्य से सभी रोगों का समाधान | 08 |
| सबसे बड़ा दु:खद् आश्चर्य | 12 |
| गौरा गाय | 16 |
| गोसंरक्षण कानून पालन के लिए क्रांति आवश्यक | 19 |
| करीमनगर विभाग स्तरीय गोरक्षा बैठक आयोजित | 20 |
| प्राचार्या ने क्लास रूम ठंडा रखने के लिए लगाया गोबर का लेप | 21 |
| गोरक्षकों का विरोध प्रदर्शन | 21 |
| Cows and Their Connection with Humans | 22 |
| Cow Grazing and Biodiversity An Analysis of Grassland Ecosystems | 24 |


## हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

**पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली**
**खाता नम्बर - 04072010038910**
**IFSC CODE : PUNB0040710**

नोट : शुल्क **"भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद"** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

विश्लेषण

डॉ राम गोयल

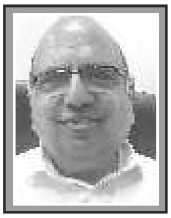

**पेस्टिसाइड्स के अत्यधिक उपयोग ने हमारे शरीर के अग्न्याशय (पेनक्रियाज) को प्रभावित किया, जिससे घर- घर में डायबिटीज फैल गई। पहले माता- पिता को डायबिटीज 70 वर्ष की उम्र में होती थी, लेकिन अब यह बीमारी 45 वर्ष की उम्र में ही सामने आने लगी है। वहीं, फर्टिलाइजर के कारण कैंसर जैसी घातक बीमारी का भी तेजी से प्रसार हुआ है।**

# बढ़ते पेस्टिसाइड्स का सेहत पर प्रभाव और बीमारियों के प्रसार में इनका अप्रत्यक्ष योगदान

भारत में हर साल डायबिटीज और कैंसर जैसी बीमारियों में बढ़ोतरी हो रही है। 1970 से पहले हमारा देश इन बीमारियों से काफी हद तक मुक्त था, लेकिन हरित क्रांति के बाद कृषि क्षेत्र में आए बदलावों ने स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डाला। 1970 तक देश में खाद्यान्न की कमी थी, जिससे निपटने के लिए सरकार ने कृषि वैज्ञानिकों को उत्पादन बढ़ाने के उपाय सुझाने को कहा। उस समय एम. एस. स्वामीनाथन कृषि विभाग के अध्यक्ष थे, जिन्होंने हरित क्रांति को बढ़ावा दिया और भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया। इसके लिए पश्चिमी देशों से जेनेटिकली मोडिफाइड (GM) बीज लाए गए, लेकिन ये बीज भारतीय जलवायु और जैव विविधता के अनुकूल नहीं थे।

### पश्चिमी कृषि पद्धति का असर

भारत एक उष्णकटिबंधीय देश है, जहां कीट–पतंगे, सर्प, बिच्छू और अन्य जीवों की बहुतायत है। पश्चिमी देशों की तुलना में यहां कृषि की चुनौतियां अलग हैं। वहाँ किसान पढ़े–लिखे होते हैं और पेस्टिसाइड या फर्टिलाइजर का नियंत्रित उपयोग करते हैं। लेकिन भारत में जीएम बीजों की प्रतिरोधक क्षमता कम होने के कारण कीटों का प्रकोप बढ़ गया और किसानों ने अधिक मात्रा में पेस्टिसाइड्स का उपयोग शुरू कर दिया।

जब पेस्टिसाइड्स जमीन में पहुंचे, तो उन्होंने मिट्टी के प्राकृतिक बैक्टीरिया, वायरस और केंचुओं को नष्ट कर दिया। ये सूक्ष्मजीव जैविक अपशिष्ट को विघटित कर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखते थे। उनके नष्ट होने से मिट्टी की उर्वरता घटी, जिससे उर्वरकों (फर्टिलाइजर) का उपयोग बढ़ा। लेकिन उर्वरक पेट्रोलियम डेरिवेटिव होते हैं, जिनका अधिक इस्तेमाल स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए घातक साबित हुआ।

### पेस्टिसाइड्स और उर्वरकों से स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

**(क) डायबिटीज और कैंसर का बढ़ता खतरा :** पेस्टिसाइड्स के अत्यधिक उपयोग ने हमारे शरीर के अग्न्याशय (पेनक्रियाज) को प्रभावित किया, जिससे घर– घर में डायबिटीज फैल गई। पहले माता– पिता को डायबिटीज 70 वर्ष की उम्र में होती थी, लेकिन अब यह बीमारी 45 वर्ष की उम्र में ही सामने आने लगी है। वहीं, फर्टिलाइजर के कारण कैंसर जैसी घातक बीमारी का भी तेजी से प्रसार हुआ है।

**(ख) अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ**

1. **श्वसन रोग** – पेस्टिसाइड्स के हानिकारक कण हवा में घुलकर अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और अन्य फेंफड़े संबंधी बीमारियों को जन्म देते हैं।
2. **प्रजनन क्षमता में कमी** – उर्वरकों में मौजूद रसायन हार्मोनल असंतुलन उत्पन्न कर प्रजनन दर को प्रभावित करते हैं।
3. **नेत्र और गुर्दे की समस्याएँ** – डायबिटीज का प्रभाव आंखों और गुर्दों पर पड़ता है, जिससे हर अस्पताल में डायलिसिस मशीनों की संख्या बढ़ गई है।
4. **तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव** न्यूरोटॉक्सिक पेस्टिसाइड्स मस्तिष्क को प्रभावित कर याददाश्त की समस्या और न्यूरोलॉजिकल विकार उत्पन्न कर सकते हैं।

**कृषि में बदलाव के उपाय**

आज किसान बिना फर्टिलाइजर और पेस्टिसाइड्स के खेती करने की कल्पना भी नहीं कर सकता, लेकिन यह स्थिति बदली जा सकती है। यदि सरकार सही नीतियाँ अपनाए और किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करे, तो समस्या का हल निकल सकता है।

**(क) जैविक खेती की ओर रुख** – मैं खुद बचपन से खेती कर रहा हूँ और अपने खेतों में कभी पेस्टिसाइड्स या फर्टिलाइजर का उपयोग नहीं किया। हमारे खेतों की मिट्टी जैविक खाद (गोबर की खाद) से पोषित है, जिससे हमारी फसलें आसपास के किसानों की तुलना में अधिक उपज देती हैं और हमें कभी भी कीटों की समस्या नहीं हुई। स्वस्थ मिट्टी से पैदा हुई फसलों पर कीड़ों का प्रभाव कम होता है।

**(ख) पेस्टिसाइड्स और उर्वरकों को चरणबद्ध तरीके से कम करना**–सरकार यदि हर साल तीन राज्यों में पेस्टिसाइड्स को चरणबद्ध तरीके से प्रतिबंधित करे तो पांच वर्षों में संपूर्ण भारत में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है।

**1. पहले साल – 80%** किसान को सब्सिडी देकर जैविक खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया जाए।

**2. दूसरे साल – 60%** सब्सिडी दी जाए और किसानों को अधिक जैविक खाद उपलब्ध कराई जाए।

**3. तीसरे साल – 40 %** किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षित किया जाए।

**4. चौथे साल – 20%** किसानों को पूरी तरह जैविक खेती अपनाने के लिए सहयोग दिया जाए।

**5. पाँचवें साल –** संपूर्ण देश में जैविक खेती को अनिवार्य कर दिया जाए।

इस प्रक्रिया के पूर्ण होने के बाद किसानों का फर्टिलाइजर और पेस्टिसाइड्स पर होने वाला खर्च पूरी तरह समाप्त हो जाएगा और उत्पादन भी पहले से अधिक होगा।

**कृषि वैज्ञानिकों की भूमिका और वास्तविकता**

*दुर्भाग्य से, हमारे कृषि वैज्ञानिक हकीकत से मुँह मोड़ रहे हैं और सरकार को भ्रमित कर रहे हैं। वे इस तथ्य को अनदेखा कर रहे हैं कि जैविक खेती से भी भरपूर पैदावार ली जा सकती है। यदि सरकार इस दिशा में ठोस कदम उठाए, तो हमारा भविष्य स्वस्थ और समृद्ध हो सकता है।*

**निष्कर्ष**

भारत में बढ़ती बीमारियों का प्रमुख कारण अत्यधिक पेस्टिसाइड्स और उर्वरकों का उपयोग है। यदि इन्हें नियंत्रित किया जाए और जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाए, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक स्वस्थ जीवन जी सकेंगीं। मिट्टी की उर्वरता को पुनः बहाल करने में 4–5 साल का समय लगता है, लेकिन यह बदलाव दीर्घकालिक रूप से किसानों और समाज के लिए लाभकारी होगा। सरकार को चाहिए कि वह किसानों को आर्थिक सहायता और प्रशिक्षण देकर इस दिशा में कार्य करे, ताकि भारत फिर से स्वस्थ कृषि प्रणाली को अपना सके और बीमारियों से मुक्ति पा सके।

यथार्थ

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

# गोमाता : मानव मूल्यों की रक्षक

गाय, एकमात्र **'माता'** का ही गुण धारण नहीं करती अपितु प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरणा की वह शक्ति है जो व्यक्ति को उसके वास्तविक स्वरूप का दर्शन कराती है। आज व्यक्ति अपना मूल गुण 'मानवता' को भूलता जा रहा है। वह, उससे परिचित कराती है; जीवन मूल्यों को सिखाती है। आज व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ करने की धारणा रखता भी है तो इस उद्देश्य के साथ कि इसके बदले उसे कुछ न कुछ अवश्य प्राप्त होगा। निस्वार्थ भाव से कुछ करने की भावना आज व्यक्ति के अंदर समाप्त होती नज़र आ रही है। वहीं हमारी गोमाता प्रतिक्षण, प्रतिदिन निस्वार्थ कर्म की सीख दे प्रेरित कर रही है कि परिस्थिति कैसी भी हो, अपना कर्म करते रहना है। यही सच्ची सेवा है, साधना है और सार्थकता।

श्रीमालकम आर. वैटर्सन, अमेरिका टेनेसी प्रांत के भूतपूर्व गवर्नर ने कहा है, **''गौ'**, बिना ताज की महारानी है, उसका राज्य सारी समुद्रवसना पृथ्वी है। सेवा उसकी विरद है और जो कुछ वह लेती है उसे सौ गुणा करके देती है।'

आजकल एक विषय चर्चा का बन चुका है कि इन गायों के कारण दुर्घटनाएँ अधिक हो रही हैं, क्योंकि उनकी संख्या अधिक बढ़ गई है और खुला छोड़ देने के कारण सड़क पर घूमती हैं। गायों की संख्या बढ़ना तो हमारे लिए सौभाग्य की बात है, क्योंकि इसका अर्थ है हमारा देश समृद्ध हो रहा है। और बात सड़क पर घूमने की है तो प्रश्न यह भी उठना चाहिए कि इसका कारण क्या है और कौन है?

पूर्व काल में गाय वनों में या आस – पास के मैदानों में हरी घास चरने के लिए जाती थीं। प्रारंभ में ग्वाला चराने के लिए ले जाते थे फिर गाय अभ्यस्त हो जाती थीं और वे स्वयं अपने स्थान पर वापस आ जाती थीं। चरने के दौरान वे हरी घास और जड़ी – बूटियाँ खाती थीं जिससे दूध बहुत पौष्टिक और रोगों को दूर करने की शक्ति से भरपूर

होता था। पूरे दिन चरने के बाद वे घर पर बहुत कम मात्रा में सेवन करती थीं, परंतु अधिक मात्रा में दूध देती थीं। आज यदि वे चरने भी जाएँ तो कहाँ जाएँ?

आज मानव इतना स्वार्थी हो गया है कि प्रकृति के संतुलन का न ख्याल रखा, न उसकी रक्षा की। हमारी आवश्यक और अनावश्यक वाली इच्छाओं ने प्रकृति को असंतुलित कर दिया। आज गायों को चरने के लिए न हरी घास रही, न कोई वन, न ही कोई मैदान। अब रह गए हैं तो बस कंकरीट के भवन और ये सड़कें। आज गोमाता एक ओर जहाँ खूँटे पर बंधकर सूखा, बनावटी भूसा खाकर अपना गुजारा करती है, वहीं हरी घास की तलाश में सड़कों पर मौत का शिकार बन जाती है, और इसका दोष भी व्यक्ति उन्हीं को ही देता है।

वर्तमान समय से कुछ समय पीछे जाएँ तो देखेंगे कि व्यक्ति स्वस्थ और उसकी आयु दीर्घ होती थी, क्योंकि जिस अन्न को वह ग्रहण करता था, जिस दूध, दही, मक्खन और घी का सेवन करता था, वे सब गोमाता की ही देन थीं। वास्तव में चरने के उपरांत खायी गयी जड़ी–बूटियाँ और हरी घास का जो दूध मिलता था, वह स्वास्थ्यवर्धक होता था। पूरे दिन चरने के दौरान खेतों, वनों में किए गए गोबर, खाद के रूप में उर्वरा शक्ति का कार्य करते थे जिससे भूमि उपजाऊ होती थी और उससे उगने वाला अन्न शक्ति देने वाला।

**'कश्यप संहिता' में लिखा है, 'दूध से बढ़कर कोई जीवन बढ़ाने वाला आहार नहीं है।'** आज व्यक्ति दूध पीता है तो

इंजेक्शन लगाकर, खाता है तो यूरिया। आज हमें जागरूक होने की अति आवश्यकता है अन्यथा भविष्य गर्त में जाने वाला होगा, जिसका प्रारंभ हो चुका है। बचपन में ही स्मरण शक्ति का कम होना, आँखों पर चश्मा लगना, कम उम्र में बाल सफेद और प्रचलित बीमारी 'मधुमेह' जिसके लिए कोई उम्र नहीं, बच्चे से बूढ़े सभी को हो रही है, यह सब समस्याएँ क्यों और कहाँ से पैदा हो रही हैं? क्या विचार करने की आवश्यकता नहीं? इन समस्याओं के समाधान पर विचार नहीं हुआ तो भविष्य विनाश की ओर है। इन सब को रोकने के लिए सर्वप्रथम कदम उठाना है तो गाय की रक्षा, गाय की सेवा, गोवंश संख्या में वृद्धि की ओर ध्यान देना होगा। मात्र इतना ही नहीं, गाय के प्रति प्रेम, श्रद्धा उसी प्रकार रखनी होगी जिस प्रकार अपने इष्टदेव और माता के लिए होती है। श्री श्री चैतन्य महाप्रभु ने मानव को संदेश देते हुए गोमाता के प्रति श्रद्धा और उसकी अतुलनीय विशेषता का गुणगान किया है –

*"गौ दुग्ध खाओ, गाभी तोमार माता।*
*वृष अन्न उपजाए, ताते तेहो पिता।।*
*पिता माता मारी खाओ, एवा कौन धर्म।*
*कौन बले करो तूमि एमत विकर्म।।"*

गाय, मात्र अन्न के अतिरिक्त कुछ नहीं लेती परंतु इतना देती है कि व्यक्ति अपने पूरे जीवन में स्वस्थ और संपन्न जीवन तो व्यतीत करता ही है, मरणासन्न में ईश्वर के दर्शन भी कर पाता है। महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती जी कहते हैं – "हे राजपुरुषो! जिस **गौ** से दूध – घी आदि उत्तम पदार्थ प्राप्त होते हैं, जिनके दूध आदि से सब प्रजा की रक्षा होती है, उनको कभी मत मारो और जो उन प्राणियों को मारे उनको राजादि न्यायधीश दंड देवें।"

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी. आयुर्वेद)

# पंचगव्य से सभी रोगों का समाधान

**गोदुग्ध के घरेलू उपचार**

1. गाय के कच्चे दूध में निंबू डालकर चेहेरे पर मलने से कांतिवर्धन, तारुण्यपिटिकाओं (मुहाँसे) पर लाभ होता है।
2. दौर्बल्य अवस्था में गोदुग्ध का सेवन करने से अशक्तता दूर होती है। चीनी डालकर सुबह–शाम 1 कप गोदूध सेवन करें।
3. शारीरिक दाह रहने पर गाय के ½ कप दूध में ½ कप पानी मिलाकर सेवन करें।
4. आँवयुक्त पतली चिकट दस्त होने से गरम दूध में (कप 1 चम्मच निंबू निचोडकर तत्काल सेवन करने से लाभ होता है।
5. सर्दी खाँसी – इसमें 1 कप दूध में ¼चम्मच हल्दी डालकर उबालने के बाद 1 चम्मच गुड़ डालकर गरम–गरम सेवन करें।
6. सिर्फ गाय दूध से अभ्यंग अथवा मालिश करने से त्वचा सतेज रहती है।
7. शुक्रधातुवर्धक होने से अल्प शुक्राणु अवस्था में गोदुग्ध सेवन लाभदायक है।
8. कच्चे ठंडे दूध की पट्टियाँ आँखों पर रखने से नेत्रदाह कम होता है।
9. प्रसूतिकालीन वेदना कम करने और बच्चा सुदृढ होने के लिये गर्भिणी अवस्था में रोज सुबह–शाम गाय का दूध सेवन करें।
10. उबालकर ठंडा किया हुआ गाय का दूध पीने से पेट की जलन कम होती है।
11. स्मरणशक्ति, मस्तिष्कदौर्बल्य और विश्लेषणात्मक बुद्धि के लिये शंखपुष्पी पंचांग 3 ग्राम, दूध और मिश्री मिलाकर 3–4 सप्ताह प्रातः पीने से लाभ प्राप्त होता है।
12. जायफल कच्चे गोदुग्ध में पत्थर पर घिसकर लेप लगाने से चेहरे पर मुहाँसे कम होते हैं।
13. लटका काग (उपजीभ बढ़कर जीभ को स्पर्श करना) में 250 मिली दूध, ½ चम्मच हल्दी, ¼ चम्मच सौंठ चूर्ण सेवन से खाँसी कम होती है।
14. कब्ज में इसबगोल भूसी 5 से 10 ग्राम 200 मिली. दूध में भिगोकर रख दें। गाढी होने पर चीनी डालकर खा लें। बाद में गरम दूध पी लें। लाभदायी होता है।

15. **मातृदुग्धवर्धक योग** – सफेद जीरा, सौंफ और मिश्री समभाग मिलाकर उसमें से 1–1 चम्मच एक कप दूध में 3 बार सेवन करें।

**गोदधि से घरेलू उपचार :–(अनुभूत योग)**

1. **मुखदूषिका (Pimples)** – दही 4 चम्मच, टंकण 500 मि.ग्रा., सुहागा पावडर – 10.5 मि. ग्रा. एक साथ मिलाकर मुहाँसों पर लेप करने से लाभ होता है।
2. **पुराना जुकाम** चार काली मिर्च पावडर, 1 कटोरी (100 ग्रा.) दही के साथ 1 महिना सतत सेवन से पुराना जुकाम नष्ट होता हैं।
3. गर्भिणी अवस्था में चांदी के पात्र में जमाया हुआ दही सुलभ और सामान्य प्रसूति के लिए श्रेष्ठ है। इस दही के सेवन से गर्भस्राव अकाल प्रसूती इन अवस्थाओं में लाभ होता है।
4. दही सिर के बालों में लगाने से जुएँ नष्ट होती हैं।
5. इसबगोल भूसी 1 चम्मच + देसी गाय के दूध से बना दही 2 चम्मच मिलाकर दिन में दो बार पतली दस्त के लिए 3 दिन सेवन करें।

**तक्र (छाछ) के कुछ घरेलू उपाय :–**

1. तक्र में चित्रक चूर्ण मिलाकर पीने से पतले दस्त बंद हो जाते हैं।
2. शुद्ध बाकुची चूर्ण तक्र में मिलाकर पीने से सभी त्वचाविकारों में लाभ होता है।
3. गिलोय के पत्तों का कल्क बनाकर तक्र के साथ सेवन करना पीलिया में हितकारी होता है।

**मक्खन के घरेलू उपचार :–**

**1.** जिस बवासीर में गुदामार्ग से खून आता है, ऐसी स्थिति में मक्खन में नागकेशर चूर्ण लेने से फायदा होता है।

**2.** खूनी बवासीर के लिए नागकेशर चूर्ण 1 चम्मच देसी गाय के दूध के ऊपर की मलाई या ताजे मक्खन में मिलाकर दिन में दो–से–पाँच दिन तक सेवन करें।

**3.** शरीर में बढ़ी गर्मी के लिए देसी गाय के दही को मथकर निकाला ताजा मक्खन मिश्री के साथ सुबह सेवन करें।

**गोघृत के घरेलू उपचार :– सामान्य उपयुक्तता**

1. विविध वातरोगों में जैसे जोड़ों में दर्द, कमर में दर्द, पीठदर्द आदि में गाय के घी से मालिश करने से आराम होता है। (स्नेहन) (लेकिन जोडों पर सुजन हो तो मालिश न करें)।
2. गाय का घी कुनकुना करके 2–2 बूँद नाक में डालने से (नस्य) विविध रोग दूर होते हैं। इंद्रियों की शक्ति बढ़ती है। (नाक, कान, जिव्हा / जीभ, आँख और त्वचा ये पाँच अवयव इंद्रियां कहलाती हैं)।
3. गाय का घी पिघलाकर 2–4 बूँद नाक में डालने से बाल झड़ना, (खालित्य), बाल पकना या सफेद होना (पालित्य) और सरदर्द नष्ट होता है। यह 45 दिन लगातार करना चाहिए। गर्मी की वजह से नाक से खून गिरने पर गाय का घी नाक में डालें।
4. जुकाम, सर्दी (अनुर्जिताजन्य प्रतिश्याय) में गोघृत का सेवन परिणामकारक है। 1 चम्मच घी गरम पानी में दिन में 2 बार लें।
5. अनेक आँखों की बीमारियों (नेत्ररोग) में गोघृत सेवन परिणामकारक है। गाय का घी 2–3 बूँद नाक में डालने से (नस्य) तथा आँखों में डालने से (आध्योतन) आँखों की जलन कम होती है। इससे नेत्रशक्ति में सुधार होता है। नजर की कमजोरी में भी लाभ होता है। (गाय के घी के दीये के ऊपर थाली पकड़ कर उस पर जो कालापन आता है उसे गाय के ही पुराने घी में डालकर काजल बनाकर रोज आँखों में डालने से नेत्रशक्ति अच्छी रहती है)
6. कमजोरी (दुर्बलता) के कारण बदन दर्द (अंगमर्द), शरीर भारी लगना (जाड्यता), मांसपेशी की शिथिलता, नित्य काम जैसे उठना, बैठना, चलना आदि करते समय भी थकान लगना तथा शस्त्रक्रिया (Surgery) के बाद गाय के घी से मालिश करने से दृढता प्राप्त होती है।
7. गाय का घी बुद्धि बढाने वाला, धारणाशक्ति बढाने वाला है। हर रोज गाय का घी 1–1 चम्मच सेवन करने से स्मरणशक्ति एवं धारणाशक्ति बढ़ती है। नींद अच्छी आती है। घी की सिर में मालिश करने से स्मरणशक्ति बढ़ती है।
8. विविध प्रकार के जख्म (व्रण) तथा जलनेपर (आग से या गरम तेल आदि से) घी लगाने से जलन कम होती है।
9. पुराने बुखार में (जीर्ण ज्वर) 2 चम्मच गाय का घी और गोदुग्ध 1 कप दो बार लेने से अच्छे

परिणाम दिखते हैं। तेज बुखार में गोघृत की मालिश से शरीर स्वस्थ होता है।

10. भोजन के शुरूआत में 1 चम्मच घी + सैंधव नमक + नींबू रस भूख बढ़ाता है। पाचन सुधारता है।

11. हदय रोगों में अन्य घृत की अपेक्षा भारतीय नस्ल की गाय का घृत इस्तेमाल करना चाहिए। अनुसंधान से यह सिद्ध हुआ है कि गाय के घी के सेवन से रक्त में कोलेस्टेरॉल की वृद्धि नहीं होती है।

12. पाँव के तलुवे में दरारें आना, एड़ियाँ फटना {Cracked feet}] तलपाँव में अंगार हो तो, 15 मिनट कुनकुने पानी में पाँव भिगोकर बाद में गोघृत रगड़कर लगाने से पाँव नरम हो जाते हैं, दरारें ठीक हो जाती हैं।

13. गोघृत को चावल के साथ मिलाकर यज्ञ में आहुति देने से एथीलीन ऑक्साइड, प्रोपीलीन ऑक्साइड और फॉरमेल्डीहाइड गैसें बनती हैं। प्रोपीलीन ऑक्साइड से पर्यावरण शुद्धी व जल वर्षा करने में सहायक होती है। शेष दो गैसें जीवाणु रोधक हैं। 1 चम्मच गोघृत के हवन से 1 टन वायु शुद्ध हो जाती है। गाय के गोबर के कंडे पर 1 चम्मच घी डालने पर सारा घर महक उठता है। पूरा वातावरण शुद्ध होता है। यह अगरबत्ती और धूपबत्तियों से अधिक लाभदायक है।

14. बालकों की छाती में कफ जमा हो गया तो गाय का पुराना घी, छाती पर लगाकर मालिश करें।

15. धतूरा के विष पर गाय का घी खूब पिलायें। गोघृत विषनाशक है। इसे गोदुग्ध में मिलाकर पीने से ज्यादा प्रभाव पड़ता है।

16. सर्प के विष पर पहले 250 ग्राम पानी पिलायें इससे उल्टी दस्त होकर विष शमन हो जाता है। जरूरत समझें तो दुबारा दें।

18) हाथ पैर में जलन होने पर गाय के घी से मालिश करें।

17. घाव पर, घी में हल्दी पकाकर उसका रूई का फोया लगाने से घाव भर जाता है। फोड़े, फुंसी पर भी गरम गाय के घी में भिगाकर रुई का फोहा रखने से फायदा होता है।

18. मक्खन से निकाला हुआ घी तृप्तिकारक होता है।

19. गरमी के ऊपर गाय के घी में सीप का भस्म डालकर उसे लेप करें।

20. तृष्णा रोग पर घी और दूध मिलाकर पिलावें।

21. एक वर्ष पुराना घी मूर्च्छा, उन्माद, कर्णशूल, योनि दोष (चक्कर आना, मानस रोग, कान का दर्द, एक प्रकार का स्त्रीरोग क्रमशः) इन बीमारियों में लाभप्रद है।

22. **कब्ज (संडास साफ न होना) कोष्ठबद्धता** – कब्ज ठीक करने के लिए प्रायः जुलाब कराने वाले द्रव्य लिए जाते हैं। जुलाब से पहले तीन दिन तक 1 –1 चम्मच गाय के ताजे घी में थोड़ी पिसी काली मिर्च डालकर सोते समय चाट लें। आंतें मुलायम हो जायेंगीं, मल फूल जायेगा तथा आसानी से बाहर निकल जायेगा।

23. **हिचकी**– अधिक हिचकी आने पर 1–2 चम्मच ताजा गाय का घी थोड़ा गर्म कर के चाट लेना चाहिए। हिचकी आना बंद हो जायेगा।

24. **गला बैठना** – गला बैठने पर 2 चम्मच ताजे घी में पिसी काली मिर्च डालकर गर्म करें और ठंडा कर लें। भोजन के बाद सेवन करें।

25. **बवासीर** – बवासीर में गोघृत तथा त्रिफला चूर्ण मिलाकर सेवन करना लाभदायक रहता है।

26. **छाले पड़ना**– छाले चाहे जलने से हों या अन्य किसी कारण से गाय के घी में हल्दी मिला हुआ लेप जलन को शांत करता है। छाले बैठने पर घाव भी भर जाते हैं।

27. **होंठ फटना** – ठंडी से या रूखेपन से होंठ फटने पर गाय के घी में थोड़ा–सा नमक मिलाकर लगाने से फायदा होता है।

28. **नाभी फूलना** – बच्चे की नाभी फूलने लगे तो गाय के गर्म घी में चुटकी भर हल्दी डाल कर रुई का फोहा उसमें भिगो लें। सुहाता गर्म रह जाने पर नाभी पर फोहा रखकर लेप दें। नाभी सिकुडकर सामान्य हो जाएगी।

29. **नासूर** – यह हड्डी तक जाने वाला फोड़ा है। इसमें चमड़ी से हड्डी तक छेद बन जाता है। इसके मवाद से बहुत बुरी बदबू आती है। पुराने गाय के घी से नासूर जल्दी ही सूख जाता है। पहले नीम के पत्तों के काढ़े से फोड़े को साफ करें। बाद में कपड़े की बत्ती बनाकर गोघृत में तर करके नासूर में डाल दें। दिन में 2–3 बार बत्ती बदलें। 1½ – 2 महिने में फोड़ा बिलकुल सूख जायेगा। रोगी को गाय के दूध में गाय का घी पिलायें ताकि शरीर निर्विष रहे और जल्दी लाभ मिले।

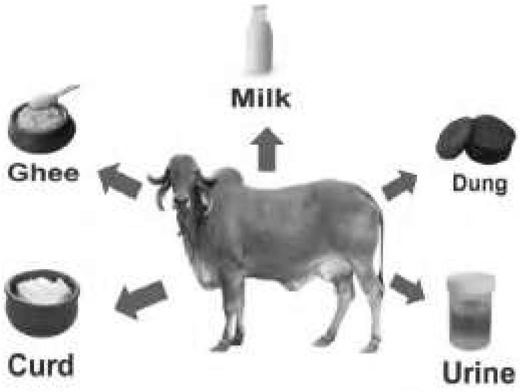


30. **चेहरे की कांति बढ़ना** – रात में सोते समय हर रोज चेहरे पर घी की मालिश करें। कुछ ही दिनों में चेहरे के दाग, धब्बे, झांइयाँ मिट जाती हैं तथा त्वचा कांतिमय हो जाती है।
31. **बाल लंबे व घने करना** – सोते समय सिर के बालों में गाय का घी लगाने से बाल लंबे, घने, चमकदार हो जाते हैं तथा उनका झड़ना बंद हो जाता है।
32. निद्रानाश की अवस्था में देसी गाय के घी का रात्रि में सोते समय दोनों पावों के तलुओं में 15 मिनट तक नियमित मालिश करें।
33. आँख की दृष्टि अच्छी होने के लिए 1 साल तक नियमित गोघृत से पादाभ्यंग करना बताया गया है।
34. गोघृत दो से चार बूंद कुनकुनी अवस्था में रात्रि में सोते समय नाभी में डालना अनेक समस्याओं के लिए लाभदायक है।
35. **अनिद्रा – (नींद न आना)**

1. गाय के घी में जायफल घिसकर आँख की पलकों पर पतला लेप करने से नींद आ जाती है।
2. गाय के घी से रात्रि में पैर के तलुवों पर मालिश करने से मन शांत होकर अच्छी नींद आती है। इससे नेत्र की ज्योति भी बढ़ती है।
3. गाय के घी की 1–2 बूँद नथुनों में सोते समय लगाने से भी लाभ होता है।

### गोमूत्र से घरेलू उपचार :–

1. बवासीर में गोमूत्र गर्म कर मस्सों पर सेक करें। वैद्य की सलाह से गोमूत्र की बस्ती से भी लाभ होता है।
2. मोटापा दूर करने के लिए 10 मि.लि. गोमूत्र, कुनकुने पानी या 50 ग्राम शहद के साथ सेवन करें।
3. गोमूत्र के नियमित सेवन से कोलेस्टेरॉल का प्रमाण कम होता है। अतः हृदयरोग में लाभदायक है।
4. **पेट में कीड़े होना (Worm infestation)** 10–से–20 मि.ली गोमूत्र में 4–6 ग्राम डिकेमालि चूर्ण सेवन करने से उदरकृमी नष्ट होते हैं।
5. गोमूत्र पीने से कब्ज की शिकायत दूर होती है।
6. चमड़ी की बीमारियों में गोमूत्र का अभ्यंग करने से फायदा होता है। एक्जिमा, दाद–खाज–खुजली में गोमूत्र लगाने से अच्छे परिणाम पाए गए हैं। गोमूत्र में नीम के पत्ते डाल कर नहाएँ।
7. 20 मि.ली गोमूत्र, 4 ग्राम जवाखार के साथ 3 महीने सेवन करने से पुराना जलोदर कम होता है।
8. गोमूत्र का निरंतर सेवन और 2–2 बूँदें नाक में डालने से पुराने जुकाम में लाभ होता है।
9. मोच या आघात के कारण सूजन हो तो गोमूत्र गर्म कर सेकें अथवा गोमूत्र में कपड़ा भिगोकर सूजन के स्थान पर रखें।
10. पीलिया (जॉन्डीस, हिपेटायटीस) में ताजा गोमूत्र 20 मि.ली. दिन में 2 बार सेवन करने से लाभदायक होता है।
11. किसी कीटक दंश से सूजन दाह आदि हो रही हो तब देसी गाय के मूत्र या कामधेनु. गोमूत्र अर्क को बाहर से लगाएं। ऐसा दिन में तीन–चार बार करें। सूजन, दाह उतरने तक करते रहें।

### गोमय (गोबर) के घरेलू उपचार :–

1. घुटनों का दर्द या अन्य जोडों के दर्द में देसी गाय के ताजे गोबर का लेप लगाने से अच्छा परिणाम देखने में आया है।
2. देसी गाय के ताजे गोबर में तलपाँव डुबाकर रखने से तलपाँव के सोरायसिस में अच्छा लाभ पाया गया है। (Psoriasis)
3. घर को गोबर का लेप करने से हानिकारक, तीव्र अल्ट्राव्हायलेट किरणों से बचाया जा सकता है।
4. घर में गोबर का धूपन करने से मच्छर, बीमारी फैलाने वाले जीवाणु नष्ट होते हैं।
5. अस्थमा (दमा) की शिकायत हो तो गोबर का रस नाक में डालने से फायदा होता है। कई दंतविकारों में गोबर की भस्म द्वारा दाँत माँजने से आराम होता है। मसूड़े मजबूत रहते हैं।

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

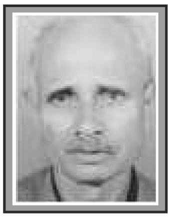

**पर्यावरण को पवित्र बनाये रखने में गोवंश की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही साथ यह मनुष्यों की आजीविका का आधार भी है। इसलिये गोवंश का पालन–पोषण और रक्षा अपने परिवार के आदरणीय– पूजनीय घटक माता–पिता के समान करना मनुष्य का परम धर्म माना गया है।**

# सबसे बड़ा दु:खद् आश्चर्य

हमारे मातृपितृवत आदरणीय गोवंश पर वर्तमान में छाये घोर भयावह संकट से प्रायः समस्त लेखों में भिन्न–भिन्न आधार पर लिखने के पश्चात् उसी बात को फिर से नये कलेवर में लिखने के लिये कोई नया आधार न मिल पाने की चिन्ता में दो प्रहर रात बीतने पर भी नींद नहीं आ रही थी। अन्ततः तीसरे प्रहर में मस्तिष्क थक हारकर निढ़ाल हो गया और निद्रा ने आगोश में ले ही लिया।

सोते ही मैं स्वप्न लोक के निर्जन वन में विचरण करने लगा और थकित हो प्यास का अनुभव कर पानी की खोज करने लगा। सम्मुख ही कुछ दूर पर पक्षियों के कलरव ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया। वहाँ एक सुन्दर सरोवर था जिसमें शतदल कमल खिले थे और अनेक मृगादि जल पी रहे थे। मैं शीघ्र ही सरोवर तक पहुँच गया और जल पीने हेतु अँजलि में भर लिया। अँजलि में जल भरते ही मुझे किसी अदृश्य शक्ति ने जल पीने से रोकते हुए कहा, मेरे प्रश्नों का उत्तर दिये बिना जल मत पीना अन्यथा तुम भी द्वापर के पाण्डवों की भाँति मूर्छित हो जाओगे और प्राण भी संकट में पड़ जायेंगे। यह वही सरोवर है जहाँ चार पाण्डव मूर्छित हो गये थे जिन्हें उनके ज्येष्ठ भ्राता युधिष्ठिर ने मेरे प्रश्नों का ठीक उत्तर देकर बचा लिया था और मैं वही यक्ष हूँ जिसके मना करने पर भी सहदेव, नकुल, भीम और अर्जुन ने मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये बिना जल पीने का दुस्साहस कर अपने प्राण संकट में डाले थे।

उक्त वाणी ने मुझे जल पीने से रोका तो मैंने कहा, जल पीकर मरने से अच्छा है कि मैं आपके प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करूँ। सम्भव है मैं ठीक उत्तर देकर आपकी अनुमति से जल पी सकूँ। यदि उत्तर न दे सका तो अन्यत्र जल की खोजकर तृप्त होने का

प्रयास करूँगा। कृपया आप प्रश्न कीजिए।

यक्ष ने कहा, तो सुनो, मेरा प्रथम प्रश्न युधिष्ठिर से पूछे गये प्रश्न जैसा ही है। हमारे धर्म परायण देश में सबसे बड़ा दुखद आश्चर्य क्या है?

मैंने कुछ क्षण विचार करते हुए माता सरस्वती को स्मरण कर, मन ही मन प्रणाम कर आशीर्वाद माँगा तो मेरी वाणी स्फुरित हो गयी। मैंने कहा हे यक्ष! आप जानते हैं कि हमारे आदि पूर्वज ऋषियों ने अपनी सृष्टि विषयक जिज्ञासा का समाधान और इसमें मनुष्य की भूमिका का ज्ञान गहन अध्ययन–मननरूपी तप करते हुए स्वयं सृष्टि नियन्ता से पाया था। उसी समाधानरूपी ज्ञान के आधार पर उन्होंने मानव कर्तव्यों का निर्धारण किया। इन्हीं कर्तव्यों को धर्म कहा गया। उन्होंने मनुष्य का प्रथम महत्वपूर्ण कर्तव्य सृष्टि को निरन्तर गतिशील बनाये रखने वाली ईश्वरीय माया प्रकृति की शक्ति पर्यावरण को पवित्र बनाये रखने के लिए निर्धारित किया। पर्यावरण को पवित्र बनाये रखने में गोवंश की महत्वपूर्ण भूमिका है। साथ ही साथ यह मनुष्यों की आजीविका का आधार भी है। इसलिये गोवंश का पालन–पोषण और रक्षा अपने परिवार के आदरणीय–पूजनीय घटक माता–पिता के समान करना मनुष्य का परम धर्म माना गया। आदिकाल से ही हमारे पूर्वज अपने इस परम–पावन धर्म का पालन भली भाँति करते आये हैं, किन्तु विगत चार–पाँच दशकों से हमारे देश के लोग अपने इस परम–पावन धर्म से सर्वथा उदासीन होते जा रहे हैं। दशा यहाँ तक दूषित हो चुकी है कि आज हमारा आदरणीय–

पूजनीय गोवंश उपेक्षित–तिरस्कृत होकर मारा–मारा फिरता विलुप्ति की कगार तक पहुँच चुका है।

जिस देश में मानव–धर्मशास्त्र जैसे लोकमंगलकारी ग्रन्थ की रचना कर धर्म की अवधारणा हुई उसी देश में धर्म के प्रति उदासीनता के कारण गोवंश के प्रति हो रही घोर उपेक्षा–तिरस्कार ठीक वैसा ही कृत्य है जैसे कोई महामूर्ख उस वृक्ष को समूल उखाड़ने का प्रयास कर रहा हो जिस पर उसका भी बसेरा है। हमारे देश में इससे बड़ा दुखद आश्चर्य और क्या हो सकता है।

अपने प्रथम प्रश्न का उत्तर सुनकर यक्ष ने मुझे सरोवर का जल पीने की सहर्ष अनुमति देते हुए कहा, तुमने मेरे प्रश्न का उचित उत्तर देकर मुझे सन्तुष्ट कर दिया है। जल पीकर तृप्त हो जाओ तब मैं इसी सम्बन्ध में तुमसे चर्चा करूँगा। मेरे जल पीकर तृप्त होने पर यक्ष ने कहा, अब तुम मुझे यह बताओ कि ऐसा क्या हुआ जो देश की धर्मपरायण जनता स्वधर्म से उदासीन होकर धर्म विरुद्ध आचरण करते हुए गोवंश जैसे लोकमंगलकारी प्राणी की उपेक्षा कर उसे तिरस्कृत करती जा रही है। आजादी के बाद तो देश में लोकतान्त्रिक पद्धति से शासन हो रहा है।

मैंने कहा, हे यक्ष! हमारे देश में आजादी के पश्चात् लोकतान्त्रिक शासन कहने भर के लिये है। वस्तुतः यहाँ जनतान्त्रिक शासन व्यवस्था है जो लोकतान्त्रिक शासन का पर्याय नहीं अपितु सर्वथा भिन्न है। लोक का अर्थ है चराचर जगत् और जन का अर्थ है मनुष्य। लोकतान्त्रिक शासन पूर्णरूपेण प्राकृतिक है जिसमें जगत् हित का भाव निहित होता है। **गो** को जगत् की माता कहा गया है। **''गावः जगतस्य मातरम्''** कोरी कल्पना नहीं अपितु ज्ञान–विज्ञान की कसौटी पर सत्य सिद्ध मन्त्र है। इसीलिये हमारे पूर्वजों ने गोवंश की सेवा–रक्षा को मनुष्य का परम धर्म

कहा है। जनतान्त्रिक शासन इसके विपरीत केवल मनुष्य को महत्वपूर्ण मानकर व्यवस्था निर्धारित करता है। मनुष्यों में जो चतुर होते हैं वे सरल सज्जनों को परे ढकेलकर उनका भाग बुद्धि, धन या बल से प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप में हड़प लेते हैं, वैसे ही जैसे सूर्य की किरणें धरती के गर्भ तक से जल का शोषण कर लेती हैं।

आजादी के पूर्व ही हमारे देश में मजहबी आधार पर विभाजन की भूमिका बन चुकी थी। हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलन के अहिंसा प्रेमी पुरोधाओं ने क्रूर–कट्टर जेहादी सम्प्रदायवादियों के आगे घुटने टेककर मजहबी आधार पर देश का विभाजन स्वीकार कर उन्हें वांछित से अधिक भूमि देकर पाकिस्तान नाम से अलग देश की मान्यता दे दी। यही नहीं **''करेला नीम चढ़ा''** कहावत चरितार्थ करते हुए आबादी की अदला–बदली न करके देश को ऐसे गहन संकट में डाल दिया जिसका कुफल देश लगातार भोग रहा है और न जाने कब तक भोगेगा। कुल मिलाकर सत्य यह है कि हमारे भीरू, अविवेकी और अदूरदर्शी और सत्तालोलुप राजनेताओं ने मजहबी प्रसारवादी जेहादियों की शतरँजी चाल में फँसकर देश का बण्टाढार कर दिया है। यह कटु सत्य कहने का साहस हमारे बुद्धिमान तक नहीं कर पाते हैं। इसे दूसरा दुःखद आश्चर्य कहा जा सकता है।

हमारे गोवंश पर गहन संकट इन्हीं अविवेकी अदूरदर्शी राजनेताओं के कारण आया है। इन्होंने कलहलों, रासायनिक खादों और विदेशी गौ सदृश, अधिक दुग्धदायी किन्तु कृषि के लिए अनुपयोगी पशुओं का आयात कर हमारे गोवंश की पवित्रता तक नष्ट करने का पाप किया। इन्होंने खण्डित स्वतन्त्र भारत की नींव धर्मनिरपेक्षता (धर्म से उदासीनता) के धरातल पर रखकर देश के चरित्र तक की हत्या करने का पाप किया है। यह चाहते तो दुनिया की आर्थिक दौड़ में मध्यम मार्ग अपनाकर गोवंश की उपयोगिता बनाये रखते किन्तु धर्म को अफीम मानने वाले वामपंथियों की संगत में पड़कर तत्कालीन प्रमुख सत्ताधीश ने अपने राजनीतिक गुरू तक की अवहेलना कर गोवंश की पवित्रता–उपयोगिता दोनों को नष्ट करने का महापाप किया। मुझे आवेश में बोलते देखकर यक्ष ने कहा, पिछले दस–बारह वर्ष से सत्ताशीर्ष पर गोभक्त आसीन हैं। इतने दिनों में तो गोवंश को पुनः प्रतिष्ठित हो जाना चाहिये था किन्तु ऐसा नहीं हुआ, इसका क्या कारण है?

मैंने उत्तर में कहा लगभग पाँच दशकों से कृषि क्षेत्र में कलहलों का पूर्ण वर्चस्व स्थापित है। कृषक घण्टों का कार्य मिनटों में समाप्त कर अन्य कार्यों द्वारा धनार्जन करके उसे विभिन्न आवश्यक ही नहीं अनावश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति में व्यय करते हैं। इस प्रकार वे बाजार के वैलासिक जाल में फँसकर कठोर श्रमविमुख होते जा रहे हैं। यहाँ तक कि बैलों से कृषि करना उनके लिये पहाड़ तोड़कर नहर बनाने जैसा दुष्कर हो चुका है। उन्हें तो यही ज्ञात है कि भगीरथ का रथ पर्वत में पथ बनाता गंगा को कैलाश से मैदान तक लाया था। उन्हें भगीरथ की कठोर तपस्या जो दशकों तक पर्वत काटकर गंगा को लाने के लिये पथ बनाकर की गयी थी, के सम्बन्ध में कथावाचकों ने बताया ही नहीं।

आज का किसान ट्रैक्टर से जुताई और पम्पिंग मशीनों द्वारा सिंचाई कर रासायनिक उर्वरक

छिड़ककर तैयार फसल की कटाई – मड़ाई तक मशीनों से करके स्वयं को कठोर परिश्रमी कहते थकता नहीं है, जबकि पूर्व की अपेक्षा आज कृषि कार्यों में मानवी परिश्रम चतुर्थांश भी नहीं करना पड़ता है। अल्प परिश्रम द्वारा सम्पन्न होने वाली मशीनी कृषि के स्थान पर बैलों द्वारा जुताई–मड़ाई करके कठोर परिश्रम करते हुए कृषि करने की बात कहना तो दूर सोचना भी आज के राजनेताओं के लिये राजनीतिक दृष्टि से हानिकारक है। यदि ऐसा नहीं होता तो वर्तमान में कृषकों को आर्थिक सहायता के रूप में दी जाने वाली कृषक सम्मान निधि गोवंश आधारित कृषि करने वाले किसानों को ही देने का प्राविधान किया जा सकता था। सरकारें जानती हैं कि कठोर परिश्रम से विमुख हो चुके किसानो ंको बैल आधारित कृषि हेतु प्रेरित करना उसके लिए अगले चुनाव पर भारी पड़ जायेगा। इस प्रकार वह सत्ता से बाहर हो जायेगी। अब यक्ष ने कहा, क्या ऐसा कोई भी उपाय नहीं है जो गोवंश को उसके प्रतिष्ठित स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित करा सके?

> **सरकारें जानती हैं कि कठोर परिश्रम से विमुख हो चुके किसानो ंको बैल आधारित कृषि हेतु प्रेरित करना उनके लिए अगले चुनाव पर भारी पड़ जायेगा। इस प्रकार वह सत्ता से बाहर हो जायेंगी। अब यक्ष ने कहा, क्या ऐसा कोई भी उपाय नहीं है जो गोवंश को उसके प्रतिष्ठित स्थान पर पुन: प्रतिष्ठित करा सके?.....**

मैंने यक्ष को उत्तर देते हुए कहा, मैंने अपने एकाधिक लेखों में उस उपाय का वर्णन किया है जो यह है कि सरकार बैल चालित ट्रैक्टर जैसे हलों का निर्माण कराकर मड़ायी के लिए भी बैल चालित पूर्व के यन्त्रों को और उन्नत कर कुछ किसानों को देकर प्रोत्साहित करे। आशा है कि सफलता अवश्य मिलेगी। यह प्रयोग सफल होने पर इन यन्त्रों को बिना ब्याज के ऋण पर दिया जाय और कृषक सम्मान निधि इनसे ही खेती करने वाले कृषकों को दी जाय। साथ–ही–साथ तेल–गुड़ उद्योगों के लिये भी बैल चालित उन्नत कोल्हुओं का निर्माण **''सोने पर सुहागा''** सिद्ध हो सकता है। वस्तुतः गोवंश को बचाने के लिए उसकी शक्ति और सम्पदा दोनों का सदुपयोग करना ही एकमात्र उपाय है। यदि ऐसा नहीं होगा तो गोवंश का विलुप्त होना निकट भविष्य में निश्चित है। गोवंश को बचाकर हम विलुप्त होते जा रहे पक्षियों को भी बचा सकेंगे। इन दोनों के बचने से हमारा पर्यावरण भी एक सीमा तक शुद्ध हो जायेगा। सवेरा हो गया है कहते हुए मेरी पत्नी ने मुझे जगाकर इस अद्‌भुत स्वप्न को भंग कर दिया।

चलभाष – 8765805322

कहानी

सुश्री महादेवी वर्मा

# गौरा गाय

गाय के नेत्रों में हिरन के नेत्रों–जैसा विस्मय न होकर आत्मीय विश्वास रहता है। ऐसे प्राणी को मनुष्य से यातना ही नहीं, निर्मम मृत्यु तक प्राप्त होती है, परंतु उसकी आँखों के विश्वास का स्थान न विस्मय ले पाता है, न आतंक। गौरा मेरी बहिन के घर पली हुई गाय की वयःसंधि तक पहुँची हुई बछिया थी। उसे इतने स्नेह और दुलार से पाला गया था कि वह अन्य गोवत्साओं से कुछ विशिष्ट हो गई थी। बहिन ने एक दिन कहा, तुम इतने पशु–पक्षी पाला करती हो – एक गाय क्यों नहीं पाल लेती, जिसका कुछ उपयोग हो। वास्तव में मेरी छोटी बहिन श्यामा अपनी लौकिक बुद्धि में मुझसे बहुत बड़ी है और बचपन से ही उनकी कर्मनिष्ठा और व्यवहार–कुशलता की बहुत प्रशंसा होती रही है, विशेषतः मेरी तुलना में। यदि वे आत्मविश्वास के साथ कुछ कहती हैं तो उनका विचार संक्रामक रोग के समान सुनने वाले को तत्काल प्रभावित करता है। आश्चर्य नहीं, उस दिन उनके प्रतियोगितावाद संबंधी भाषण ने मुझे इतना अधिक प्रभावित किया कि तत्काल उस सुझाव का कार्यान्वयन आवश्यक हो गया।

वैसे खाद्य की किसी भी समस्या के समाधान के लिए पशु–पक्षी पालना मुझे कभी नहीं रुचा। पर उस दिन मैंने ध्यानपूर्वक गौरा को देखा। पुष्ट लचीले पैर, चिकनी भरी पीठ, लंबी सुडौल गर्दन, निकलते हुए छोटे–छोटे सींग, भीतर की लालिमा की झलक देते हुए कमल की पंखड़ियों जैसे कान, सब साँचे में ढला हुआ–सा था। गौरा को देखते ही मेरी गाय पालने के संबंध में दुविधा निश्चय में बदल गई। गाय जब मेरे बंगले पर पहुँची तब मेरे परिचितों और परिचारकों में श्रद्धा का ज्वार–सा उमड़ आया। उसे गुलाबों की माला पहनायी, केशर–रोली का बड़ा–सा टीका लगाया गया, घी का दिया जलाकर उसकी आरती उतारी गई और उसे दही–पेड़ा खिलाया गया। उसका नामकरण हुआ **गौरांगिनी या गौरा।** गौरा वास्तव में बहुत प्रियदर्शनी थी, विशेषतः उसकी काली–बिल्लौरी आँखों का तरल सौंदर्य तो दृष्टि को बाँधकर स्थिर कर देता था। महात्मा गांधी ने **गाय करुणा की कविता है,** क्यों कहा, यह उसकी आँखें देखकर ही समझ आ सकता है।

कुछ ही दिनों में वह सबसे इतनी हिलमिल गई कि अन्य पशु–पक्षी अपनी लघुता और उसकी विशालता का अंतर भूल गए। पक्षी उसकी पीठ और माथे पर बैठकर उसके कान तथा आँखें खुजलाने लगे। वह भी स्थिर खड़ी रहकर और आँखें मूँदकर मानो उनके संपर्क–सुख की अनुभूति में

खो जाती थी। हम सबको वह आवाज से नहीं, पैर की आहट से भी पहचानने लगी। समय का इतना अधिक बोध उसे हो गया था कि मोटर के फाटक के अन्दर प्रवेश करते ही वह बाँ–बाँ की ध्वनि से हमें पुकारने लगती। चाय, नाश्ता तथा भोजन के समय से भी वह प्रतीक्षा करने के उपरांत रँभा–रँभाकर घर सिर पर उठा लेती थी। वह हमसे साहचर्यजनित लगाव और मानवीय स्नेह के समान ही निकटता चाहती थी। निकट जाने पर वह सहलाने के लिए गर्दन बढ़ा देती, हाथ फेरने पर मुख आश्वस्त भाव से कंधे पर रखकर आँखें मूँद लेती। आवश्यकता के लिए उसके पास एक ही ध्वनि थी, परंतु उल्लास, दुःख, उदासीनता आदि की अनेक छाया उसकी बड़ी और काली आँखों में तैरा करती थीं।

एक वर्ष के उपरांत गौरा एक पुष्ट सुंदर वत्स की माता बनी। वत्स अपने लाल रंग के कारण गेरु का पुतला – जान पड़ता था। माथे पर पान के आकार का श्वेत तिलक और चारों पैरों में खुरों के ऊपर सफेद वलय ऐसे लगते थे मानो गेरु की बनी वत्समूर्ति को चाँदी के आभूषणों से अलंकृत किया गया हो। बछड़े का नाम रखा गया **लालमणि,** परंतु उसे सब लालू के संबोधन से पुकारने लगे। माता–पुत्र दोनों निकट रहने पर **हिमराशि** और जलते अंगारे का स्मरण कराते थे। अब हमारे घर में मानो दुग्ध – महोत्सव आरंभ हुआ। गौरा प्रायः बारह सेर के लगभग दूध देती थी। अतः लालमणि के लिए कई सेर छोड़ देने पर भी इतना अधिक शेष रहता था कि आस–पास के बालगोपाल से लेकर कुत्ते–बिल्ली तक सब पर मानो **'दूधो नहाओ का आशीर्वाद'** फलित होने लगा।

कुत्ते – बिल्लियों ने तो एक अद्भुत दृश्य उपस्थित कर दिया था। दुग्ध दोहन के समय वे सब गौरा के सामने एक पंक्ति में बैठ जाते और महादेव उनके खाने के लिए निश्चित बर्तन रख देता। किसी विशेष आयोजन पर आमंत्रित अतिथियों के समान वे परम शिष्टता का परिचय देते हुए प्रतीक्षा करते रहते। फिर नाप–नापकर सबके पात्रों में दूध डाल दिया जाता, जिसे पीने के उपरांत वे एक बार फिर अपने–अपने स्वर में कृतज्ञता ज्ञापन–सा करते हुए गौरा के चारों ओर उछलने–कूदने लगते। जब तक वे सब चले न जाते, गौरा प्रसन्न दृष्टि से उन्हें देखती रहती। जिस दिन उनके आने में विलम्ब होता। वह रंभा–रंभाकर मानो उन्हें पुकारने लगती। पर अब दुग्ध– दोहन की समस्या कोई स्थायी समाधान चाहती थी। गौरा के दूध देने के पूर्व जो ग्वाला हमारे यहाँ दूध देता था, जब उसने इस कार्य के लिए अपनी नियुक्ति के विषय में आग्रह किया, तब हमने अपनी समस्या का समाधान पा लिया। दो–तीन मास के उपरांत गौरा ने दाना – चारा खाना बहुत कम कर दिया और वह उत्तरोत्तर दुर्बल और शिथिल रहने लगी। चिंतित होकर मैंने–पशु चिकित्सकों को बुलाकर दिखाया। वे कई दिनों तक अनेक प्रकार के निरीक्षण, परीक्षण आदि द्वारा रोग का निदान खोजते रहे। अंत में उन्होंने निर्णय दिया कि गाय को सुई खिला दी गई है, जो उसके रक्त–संचार के साथ हृदय तक पहुँच गई है। जब सुई गाय के हृदय के पार हो जाएगी तब रक्त–संचार रुकने से उसकी मृत्यु निश्चित है। मुझे कष्ट और आश्चर्य दोनों की अनुभूति हुई। सुई खिलाने का क्या तात्पर्य हो सकता है? चारा तो हम स्वयं देखभाल कर देते हैं, परंतु संभव है, उसी में सुई चली गई हो। पर डॉक्टर के उत्तर से ज्ञात हुआ कि चारे के साथ सुई गाय के मुख में ही छिदकर रह जाती है, गुड़ की डली के भीतर रखी गई सुई ही गले के नीचे उतर जाती है और अंततः रक्त–संचार में मिलकर हृदय में पहुँच सकती है। अंत में ऐसा निर्मम सत्य उद्घाटित हुआ जिसकी कल्पना भी मेरे लिए संभव नहीं थी । प्रायः कुछ ग्वाले ऐसे घरों में, जहाँ उनसे अधिक दूध लेते हैं, गाय का पालन सह नहीं पाते। अवसर मिलते ही वे गुड़ में लपेटकर सुई उसे खिलाकर उसकी असमय मृत्यु निश्चित कर देते हैं। गाय के मर जाने पर उन घरों में वे पुनः दूध देने लगते हैं।

सुई की बात ज्ञात होते ही ग्वाला एक प्रकार से अंतर्धान हो गया, अतः संदेह का विश्वास में बदल जाना स्वाभाविक था। वैसे उसकी उपस्थिति में भी किसी कानूनी कार्यवाही के लिए आवश्यक प्रमाण जुटाना असंभव था। तब गौरा का मृत्यु से संघर्ष प्रारंभ हुआ, जिसकी स्मृति मात्र से आज भी मन सिहर उठता है। डॉक्टरों ने कहा, "गाय को सेब का रस पिलाया जाए, तो सुई पर कैल्शियम जम जाने और उसके न चुभने की संभावना है। अतः नित्य कई–कई सेर सेब का रस निकाला जाता और नली से गौरा को पिलाया जाता। शक्ति के लिए इंजेक्शन दिए जाते। पशुओं के इंजेक्शन के लिए सूजे के समान बहुत लंबी मोटी सिरिंज तथा

बड़ी बोतल भर दवा की आवश्यकता होती है। अतः वह इंजेक्शन भी अपने आप में शल्यक्रिया जैसा यातनामय हो जाता था। पर गौरा अत्यंत शांति से बाहर और भीतर दोनों की चुभन और पीड़ा सहती रहती थी। केवल कभी–कभी उसकी सुंदर पर उदास आँखों के कोनों में पानी की दो बूंदें झलकने लगती थीं।

अब वह उठ नहीं पाती थी, परंतु मेरे पास पहुँचते ही उसकी आँखों में प्रसन्नता की छाया–सी तैरने लगती थी। पास जाकर बैठने पर वह मेरे कंधे पर अपना मुख रख देती थी और अपनी खुरदरी जीभ से मेरी गर्दन चाटने लगती थी। **लालमणि** बेचारे को तो माँ की व्याधि और आसन्न मृत्यु का बोध नहीं था। उसे दूसरी गाय का दूध पिलाया जाता था, जो उसे रुचता नहीं था। वह तो अपनी माँ का दूध पीना और उससे खेलना चाहता था, अतः अवसर मिलते ही वह गौरा के पास पहुँचकर या अपना सिर मार–मार, उसे उठाना चाहता था या खेलने के लिए उसके चारों ओर उछल–कूदकर परिक्रमा ही देता रहता।

इतनी ह्रष्ट–पुष्ट, सुंदर, दूध–सी उज्ज्वल पयस्विनी गाय अपने इतने सुंदर चंचल वत्स को छोड़कर किसी भी दिन निर्जीव निश्चेष्ट हो जाएगी, यह सोचकर ही आँसू आ जाते थे। लखनऊ, कानपुर आदि नगरों से भी पशु–विशेषज्ञों को बुलाया, स्थानीय पशु–चिकित्सक तो दिन में दो–तीन बार आते रहे, परंतु किसी ने ऐसा उपचार नहीं बताया, जिससे आशा की कोई किरण मिलती। निरुपाय मृत्यु की प्रतीक्षा का मर्म वही जानता है, जिसे किसी असाध्य और मरणासन्न रोगी के पास बैठना पड़ता हो।

जब गौरा की सुंदर चमकीली आँखें निष्प्रभ हो चलीं और सेब का रस भी कंठ में रुकने लगा, तब मैंने अंत का अनुमान लगा लिया। अब मेरी एक ही इच्छा थी कि मैं उसके अंत समय उपस्थित रह सकूँ। दिन में ही नहीं, रात में भी कई–कई बार उठकर मैं उसे देखने जाती रही। अंत में एक दिन ब्रहमुहूर्त में चार बजे जब मैं गौरा को देखने गई, तब जैसे ही उसने अपना मुख सदा के समान मेरे कंधे पर रखा, वैसे ही एकदम पत्थर–जैसा भारी हो गया और मेरी बाँह पर से सरककर धरती पर जा पड़ा। कदाचित सुई ने हृदय को बेधकर बंद कर दिया। अपने पालित जीव–जंतुओं के पार्थिव अवशेष मैं गंगा को समर्पित करती रही हूँ। गौरांगिनी को ले जाते समय मानो करुणा का समुद्र उमड़ आया, परंतु **लालमणि** इसे भी खेल समझ कर उछलता–कूदता रहा। यदि दीर्घ निःश्वास का शब्दों में अनुवाद हो सकता, तो उसकी प्रतिध्वनि कहेगी, **आह मेरा गोपालक देश !**

## फार्म 4 नियम 8

| | |
|---|---|
| **समाचार पत्र का नाम** | **गोसम्पदा** |
| समाचार पत्र की पंजीकरण संख्या | 69508 / 98 |
| भाषा | हिन्दी / अंग्रेजी |
| **प्रकाशन की अवधि** | **मासिक** |
| समाचार पत्र का फुटकर मूल्य | 15 रु. मात्र |
| **प्रकाशक का नाम** | **राजेन्द्र सिंहल** |
| राष्ट्रीयता | भारतीय |
| पता | संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022 |
| **मुद्रक का नाम** | **रायल प्रेस** |
| राष्ट्रीयता | भारतीय |
| पता | बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली |
| सम्पादक का नाम | **देवेन्द्र नायक** |
| राष्ट्रीयता | भारतीय |
| पता | संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022 |
| **मुद्रण स्थान** | रायल प्रेस, बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस–1, नई दिल्ली |
| **प्रकाशन स्थान** | संकटमोचन आश्रम, से.–6,रामकृष्णपुरम नई दिल्ली–110 022 |

**मैं राजेन्द्र सिंहल, प्रकाशक, मुद्रक 'गोसम्पदा' घोषणा करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।**

**राजेन्द्र सिंहल**
**प्रकाशक–गोसम्पदा**

गंगा गोशाला में दो दिवसीय प्रांतीय सम्मेलन संपन्न, लिये गये कई अहम निर्णय

# गोसंरक्षण कानून पालन के लिए क्रांति आवश्यक

**कतरास (झारखंड)।** विहिप, गोरक्षा विभाग की भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद, क्षारखंड की ओर से आयोजित दो दिवसीय प्रांतीय कार्य समिति का अधिवेशन श्री गंगा गौशाला के प्रांगण में लिए गये अहम निर्णयों के साथ संपन्न हुआ। इसमें गाय के गोबर, गोमूत्र, दूध सहित अन्य चीजों से वस्तुयें तैयार कर आर्थिक स्रोत बढ़ाने तथा किसानों को गोद पालन की दिशा में अग्रसर करने, गोरक्षा को लेकर सरपंच से लेकर राज्यपाल तक को ज्ञापन सौंपने व गोचर भूमि को गोवंश के लिए उपयोग में लाने की दिशा में पहल करने, गांव की गाय को बाहर बेचने पर प्रतिबंध लगाने, गोहत्या पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की दिशा में कानून का कठोरता से पालन हो, इसके लिए बजरंग दल व विहिप के कार्यकर्ताओं को समाज में क्रांति लानी होगी। इन्हीं चार बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की गई। अधिवेशन में प्रदेश के धनबाद, बोकारो, कोडरमा, हजारीबाग, रामगढ़ पश्चिमी सिंहभूम, जमशेदपुर, चायबासा सहित अन्य जिलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

## गोकास्ट से शव जलाने पर नहीं फैलता है प्रदूषण : अक्का

केन्द्रीय गोरक्षा सह प्रमुख श्री अक्का रप्पू केशव राजू ने गो उत्पादित गोबर, दूध, गोमूत्र से निर्मित, घरेलू उत्पाद, जैविक खाद सहित गोकास्ट से शव के अंतिम संस्कार आदि कार्य करने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि गोबर से बने गोकास्ट से शव जलाने से प्रदूषण नहीं फैलता है। खेतों में देसी गाय के गोबर से बने जैविक खाद से खेती अच्छी होती है जिससे मनुष्य को ऊर्जा प्राप्त होती है। पहले लोग एक क्विंटल उठा लेते थे अब 10 किलो समान उठाने में हांफने लगते हैं। 40 वर्ष पूर्व हमें बीपी, सुगर या कैंसर नहीं होता था। अगर गोरक्षा के तहत अभियान चलाया जाए तो हमारा परिवार–समाज सुरक्षित रहेगा।

## गाय को बचाने के लिए गांव को गोद लेना जरूरी : बागी

क्षेत्रीय गोरक्षा प्रमुख त्रिलोकीनाथ बागी जी ने कहा कि आज हमें जरूरत है कर्ज मुक्त किसान, रसायन मुक्त अनाज, रोजगार युक्त नौजवान, देसी गाय के दूध युक्त परिवार तथा नशा मुक्त समाज की। उन्होंने कहा कि हर एक व्यक्ति को गाय को बचाने के लिए गांव को गोद लेना होगा। गोहत्या नहीं हो इस पर पहरेदारी जरूरी है। उन्होंने कहा कि दुर्भाग्य की बात यह है कि आज हम गाय से अधिक कुत्तों को पालने लगे हैं। कार्यक्रम का संचालन प्रांतीय गोरक्षा प्रमुख कमलेश सिंह ने किया। इस अवसर पर गोरक्षा विभाग के विविध प्रकोष्ठ के दीपक शर्मा, कृष्ण कन्हैया राय राजकुमार प्रमाणिक, चंदन चक्रवर्ती, रंजीत रवानी, सुजीत रवानी, कुसुम साहू आदि उपस्थित थे।

# करीमनगर विभाग स्तरीय गोरक्षा बैठक आयोजित

**करीमनगर (एजन्सी)।** गोरक्षा विभाग, विहिप, करीमनगर विभाग स्तरीय गोरक्षा बैठक जगतियाल जिले के गोल्लापल्ली मंडल केंद्र के रेड्डी फंक्शन हॉल में आयोजित की गई। कार्यक्रम में अखिल भारतीय गोरक्षा संघ के सह प्रमुख केशव राजू ने मुख्य वक्ता के रूप में भाग लेते हुए कहा कि गोरक्षा केवल एक आस्था या धर्म का मामला नहीं है और गौ–आधारित कृषि के माध्यम से बहुत कम लागत में स्वस्थ, लाभदायक कृषि प्राप्त की जा सकती है तथा गौशालाओं के माध्यम से गांव स्तर पर कुटीर उद्योग स्थापित किए जा सकते हैं, जिनके माध्यम से अतिरिक्त आय अर्जित की जा सकती है। उन्होंने आह्वान किया कि गोरक्षा किसी एक संगठन का नारा न रहे, बल्कि गांव स्तर पर आम आदमी को आगे आकर इस कार्यक्रम में भाग लेना चाहिए।

उन्होंने कहा कि वे मई माह में राज्य भर में हर गांव से लेकर तहसीलदारों और कलेक्टरों तक एक याचिका के माध्यम से बड़े पैमाने पर आंदोलन चलाने जा रहे हैं ताकि गोरक्षा के महत्व को बताया जा सके। कार्यक्रम में राज्य गोरक्षा नेता इसमपल्ली वेंकना, गोरक्षा राज्य समिति के सदस्य ऊटकूरी राधाकृष्ण रेड्डी, सहकारी निदेशक मधु, विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष पद्‌माकर, जिला सचिव गजम राजू, जगत्याल जिला गोरक्षा नेता अडेपु नरेश, जंगिली सत्यम, सातला लक्ष्मण, तुकाराम, वेंकटेश और अन्य ने भाग लिया। कार्यक्रम में चार जिलों के गोरक्षा नेता और विभिन्न गांवों से लगभग 180 कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

# प्राचार्या ने क्लास रूम ठंडा रखने के लिए लगाया गोबर का लेप

**नई दिल्ली।** दिल्ली विश्वविद्यालय के लक्ष्मीबाई कालेज में क्लास रूम को ठंडा रखने के लिए एक पारंपरिक अद्भुत तरीका अपनाया गया है। कालेज की प्राचार्या ने क्लास रूम की दीवारों पर गोबर से लेप किया। वह खुद ऐसा कर रहीं थीं। उनके साथ कुछ कर्मचारी भी लगे हुए थे। उन्होंने शिक्षकों के ग्रुप में इसका वीडियो भी साझा किया जो इंटरनेट मीडिया पर प्रसारित भी हुआ। कई प्रोफेसरों और छात्रों ने उनके इस कदम पर हैरानी जताई है।

लक्ष्मीबाई कालेज में पांच ब्लाक हैं। इनमें सी–ब्लाक की इमारत पुरानी है। इस इमारत में सबसे नीचे कैंटीन है और ऊपर कक्षाएं लगती हैं। यहीं के क्लास रूम में गोबर का लेप किया गया है। हाल ही में डीयू के कुलपति प्रो. योगेश सिंह ने एक नए ब्लाक का शिलान्यास किया था। वहीं, पुरानी इमारत को अभी तक दुरुस्त नहीं किया गया। अब प्राचार्य यहां के क्लास रूम की दीवारों पर गोबर का लेप लगाकर गर्मी से बचने के उपाय बता रही हैं। प्रसारित वीडियो में प्राचार्या कह रही हैं कि गर्मी दूर करने के लिए देसी उपाय किए जा रहे हैं। यहां जिनकी कक्षाएं हैं, उन्हें शीघ्र ही ये कमरे नए कलेवर में मिलेंगे। आपका शिक्षण अनुभव सुखद हो, इसका प्रयास हो रहा है।

# गोरक्षकों का विरोध प्रदर्शन

राजस्थान में हाल ही में गोहत्या और गोवंश पर अत्याचार की घटनाओं में वृद्धि लगातार देखी जा रही है, जो चिंतनीय है। पिछले दिनों **रामदेवरा** (जैसलमेर) क्षेत्र के **दूधिया गांव** में गत 13 मार्च को अज्ञात लोगों ने एक गाय पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। इसके अतिरिक्त, एक अन्य गाय को बंधक बनाकर कुत्तों से उसके कान कटवा दिए गए। **नागौर** जिले के कुचामन में 12 मार्च की रात डीडवाना रोड चुंगी नाका पर एक दर्जन से अधिक निराश्रित गोवंश तेजाब से झुलसे हुए मिले। **अलवर** जिले के रामगढ़ थाना क्षेत्र के मिलकपुर गांव में हुई गोकशी के मामले में पुलिस ने हनीफ उर्फ हप्पू (33) पुत्र इसाक उर्फ जेडी को गिरफ्तार किया।

घटनाओं को देखते हुए हिंदू संगठनों और गोरक्षकों में आक्रोश है। घटनाओं के विरोध में जगह–जगह धरने प्रदर्शन हो रहे हैं। हिंदू संगठनों और गोरक्षकों ने प्रशासन से मांग की है कि इन मामलों में कठोर कार्रवाई की जाए और दोषियों को शीघ्र गिरफ्तार कर कड़ी सजा दी जाए। उक्त तीनों घटनाओं ने राजस्थान में गोवंश पर हो रहे अत्याचारों को लेकर गंभीर प्रश्न खड़े कर दिए गए हैं।

Dr. Aastha Pathak

# COWS AND THEIR CONNECTION WITH HUMANS

Throughout history, cows have shared a profound and multifaceted relationship with humans. This bond spans cultures, religions, economies, and societies. Whether revered as sacred animals, depended upon for agriculture, or appreciated for their milk and meat, cows have played a vital role in human civilization. Their connection with humanity is deep-rooted, built on interdependence, and continues to evolve with changing times.

## Historical Background

The domestication of cattle dates back nearly 10,000 years. Early humans transitioned from nomadic hunting and gathering to settled agricultural societies, and cows were among the first animals to be domesticated. In ancient Mesopotamia, India, and Egypt, cows were valued not only for their milk and meat but also for their strength in ploughing fields and transporting goods. Over centuries, humans developed different breeds to suit specific needs, such as the hardy zebu cattle in India and the high-yielding Holstein cows in Europe. As civilizations flourished, cows became symbols of wealth and prosperity, especially in agrarian societies.

## Economic Importance

Cows are central to many rural economies, especially in developing nations. In countries like India, Bangladesh, and parts of Africa, cows provide a steady source of income for farmers through the sale of milk, dung, and calves. Milk is a staple in many households and serves as the base for various dairy products like butter, cheese, yogurt, and ghee.

Cow dung is used as fertilizer, fuel, and even building material in some regions. The economic significance of cattle also extends to the meat and leather industries, which are major global markets. In the developed world, dairy and beef farming are key sectors that contribute billions of dollars to national economies.

## Cultural and Religious Significance

Few animals are as deeply woven into the cultural and religious fabric of human societies as cows. In Hinduism, the cow is considered sacred and is revered as a symbol of non-violence, motherhood, and abundance. The cow is often associated with deities such as Lord Krishna and is protected under religious and sometimes constitutional laws in India. In ancient Egyptian religion, the cow was associated with Hathor, the goddess of motherhood and fertility. Similarly, in Zoroastrianism, cows are seen as a source of goodness and sustenance. Even in Greek and Roman mythology, cows appear as sacred animals linked to gods and goddesses like Hera and Juno.

In contrast, other cultures view cows more

pragmatically. In many Western countries, cows are primarily seen as livestock for meat and dairy. However, even here, the humane treatment and welfare of cows are gaining increasing attention.

## Cows in Agriculture

Cows have long been considered essential to traditional farming. Oxen—castrated male cattle — have been used for centuries to till land, draw carts, and help in various farming activities. In areas where mechanized farming is not feasible or affordable, oxen still play a critical role.

Moreover, cows contribute significantly to organic farming. Their dung enriches soil quality and helps in sustainable agriculture practices. In regions with limited access to chemical fertilizers, cow manure is an invaluable resource.

## Companionship and Emotional Connection

Beyond their utility, cows are also known to form emotional bonds with humans. Studies have shown that cows are intelligent, social animals capable of forming strong connections with their caretakers. In some cultures and households, especially in rural settings, cows are treated as family members. They are named, celebrated during festivals, and cared for with love and affection.

Cows display emotions such as joy, grief, and empathy. They recognize faces, remember people, and can develop trust-based relationships. Many animal sanctuaries and farms around the world document stories of rescued cows who show gratitude and affection towards humans who care for them.

## Modern Challenges

Despite their historical significance and the benefits they provide, cows face numerous challenges in the modern world. Industrial farming practices often prioritize quantity over quality, leading to cramped, inhumane conditions for cattle. Factory farms have raised concerns about animal cruelty, use of growth hormones, and environmental degradation.

The dairy and beef industries also have a significant carbon footprint, contributing to greenhouse gas emissions. Methane produced by cows is a potent contributor to global warming. As the world becomes more environmentally conscious, there is a growing movement towards sustainable farming, plant-based diets, and ethical treatment of animals.

In urban settings, the role of cows has diminished, yet their symbolic and economic relevance continues. With increasing awareness, many people now support organic, pasture-raised dairy and meat products, which ensure better welfare for cows.

## Cows in Science and Medicine

Cows also have a place in scientific research and medicine. Their anatomy and physiology have been extensively studied, leading to important discoveries in nutrition and veterinary science. Cows are used in biotechnology to produce insulin, antibodies, and even as surrogates for growing human-compatible organs.

Their milk is a crucial source of nutrients for growing children and is fortified to address nutritional deficiencies in many parts of the world. In Ayurveda and other traditional medicine systems, products derived from cows—such as ghee and panchagavya (a blend of five cow products)—are believed to have healing properties.

## Ethical and Philosophical Perspectives

The connection between cows and humans also raises ethical and philosophical questions. Should animals be treated solely as resources, or do they deserve rights and dignity? What constitutes humane treatment? These questions are at the heart of debates surrounding veganism, animal rights, and environmental sustainability.

Some people advocate for a complete shift away from animal-based products, while others promote balanced, ethical consumption. Regardless of one's stance, there is growing consensus that cows, like all sentient beings, should be treated with compassion and respect.

## Conclusion

Cows have stood beside humans for millennia—feeding us, helping us farm, inspiring our religions, and touching our hearts. Their contribution to human civilization is immense and multifaceted. As we move into the future, it is important to nurture this ancient bond with awareness and responsibility.

Whether in the green fields of a village or the ethical shelves of a modern grocery store, the cow continues to be a symbol of sustenance, strength, and harmony. Our connection with cows is not just about utility; it is a reflection of our values and our relationship with the natural world.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

# COW GRAZING AND BIODIVERSITY

## AN ANALYSIS OF GRASSLAND ECOSYSTEMS

Grasslands and forests often referred to as the "lungs of the Earth," play a crucial role in maintaining ecological balance and biodiversity. These ecosystems are home to a variety of plant and animal species that contribute to the stability and resilience of our environment. Among the many practices influencing grassland health, managed cow grazing has emerged as a vital tool for supporting biodiversity. When implemented thoughtfully, cow grazing can help maintain grassland ecosystems, foster plant diversity and support the survival of numerous species. Grasslands cover approximately one-third of the Earth's terrestrial surface and support a diverse range of species, including grasses, herbs, insects, birds and mammals. These ecosystems provide essential services such as carbon sequestration, soil conservation and water regulation. However, grasslands are increasingly threatened by human activities like urbanization, agriculture and climate change, leading to habitat loss and declining biodiversity. Cow grazing when managed effectively, can act as a natural ally in preserving grasslands. Historically, grazing by large herbivores has been a natural component of grassland ecosystems, shaping their structure and function. Modern grazing practices seek to replicate these natural processes to maintain ecological health and promote biodiversity.

One of the primary ways cow grazing supports biodiversity is by promoting plant diversity. Grazing prevents the dominance of fast-growing, competitive plant species that can overshadow and outcompete others. By keeping such species in check, grazing creates opportunities for a variety of grasses, herbs and wildflowers to thrive. This increased plant diversity, in turn, supports a wider range of insects and other organisms that depend on these plants for food and habitat. Rotational grazing, a practice where cattle are moved between different grazing areas, ensures that no single patch of grassland is overgrazed. This method allows vegetation to recover and maintain its diversity, creating a mosaic of habitats that cater to different species.

Grasslands grazed by cows often exhibit higher insect diversity due to the variety of plant species present. Pollinators like bees and butterflies benefit from the abundance of flowering plants that emerge in well-managed grazing systems. These insects, in turn, attract bird species that rely on them as a food source. Ground-nesting birds, such as lapwings and skylarks, also benefit from the open spaces created by grazing cattle, which provide suitable nesting sites and reduce predation risks. Cow grazing contributes to nutrient cycling in grasslands, which is essential for maintaining soil fertility. As cows graze, they consume plant material and return nutrients to the soil through their manure. This natural fertilization process enriches the soil, encouraging plant growth and supporting microorganisms that form the foundation of the ecosystem. Additionally, the trampling of soil by cattle creates small disturbances that can benefit seed germination and plant establishment. These disturbances mimic natural processes, such as those caused by wild herbivores and help maintain a dynamic and diverse ecosystem.

Managed grazing can also mitigate the risk of wildfires by reducing the accumulation of dry vegetation, which serves as fuel for fires. By keeping grass and plant biomass in check, grazing creates a more balanced ecosystem that is less susceptible to destructive fires. Furthermore, grazing helps control invasive plant species that threaten native biodiversity. Cattle can be used strategically to target and consume invasive plants, giving native species a chance to recover and reestablish themselves in the ecosystem. While cow grazing has numerous benefits for biodiversity, it must be managed carefully to avoid overgrazing and habitat degradation.

Overgrazing can lead to soil erosion, loss of vegetation and a decline in species diversity. To prevent these issues, practices such as rotational grazing, appropriate stocking rates and regular monitoring are essential. Another challenge is balancing the needs of livestock production with conservation goals. Grazing systems must be designed to meet the nutritional needs of cattle while also preserving the ecological integrity of grasslands. Collaboration between farmers, ecologists and policymakers is crucial to achieving this balance.

Conclusively, Cow grazing when managed thoughtfully, plays a pivotal role in supporting biodiversity within grassland ecosystems. By enhancing plant diversity, supporting insect and bird populations, improving soil health and controlling invasive species, grazing contributes to the resilience and sustainability of these vital habitats. However, effective management practices are essential to ensure that grazing benefits the ecosystem without causing harm. As we face increasing environmental challenges, integrating conservation-oriented grazing practices into land management strategies can help preserve the biodiversity of grasslands for future generations.

# हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

**पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली**

**खाता नम्बर - 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710**

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank

...the name you can BANK upon!

## अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

**SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP**

**9958710672m@pnb**

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI

BHARAT INTERFACE FOR MONEY | UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

# कृषि कार्यों हेतु ट्रैक्टर द्वारा चालित यंत्रों का उपयोग अध्यधिक लाभदायक

राजेन्द्र सिंहल

मैं गत 23 मार्च को हरियाणा जिला यमुना नगर, सिंढोरा के प्रवास पर था। सिढोरा गौशाला में प्रवास के दौरान श्री महन्त शोभादास जी महाराज की गौशाला एवं खेत देखने व चर्चा करने का अवसर मिला। खेती से संबन्धित निम्न समस्याओं के समाधान पर विचार किया गया :–

## ट्रैक्टर द्धारा चालित रबड की गोड़ी

सामान्य रूप से 500 गोवंश से अधिक की गोशालाओं में गोबर हटाने की समस्या रहती है। लोहे की गोड़ी कच्ची जमीन पर ठीक कार्य नहीं करती, अकसर गड्ढे बना देती है, खड़ंजे पर भी ईंटें उखड़ने का भय रहता है। इस दृष्टि से रबड़ की गोड़ी उनके लिये अध्यधिक उपयोगी है।

ज्वार, मक्का, जई आदि बड़ी मात्रा में काटने के लिए टैक्टर द्वारा चालित यन्त्रों का उपयोग किया जाना चाहिए। जिन गोशालाओं के पास 50–100 एकड़ जमीन है वे गोवंश के लिए चारे का उत्पादन करती हैं। चारे की कटाई एक समस्या है, उपरोक्त यन्त्र टैक्टर के पीछे लगाकर चारा आसानी से काटा जा सकता है।

इस विषय से संबन्धित अधिक जानकारी के लिए महन्त शोभा दास जी महाराज, सिंढोरा, यमुना नगर वाले से सम्पर्क कर सकते हैं –

सम्पर्क सूत्र– 7988493775 ,9466349175

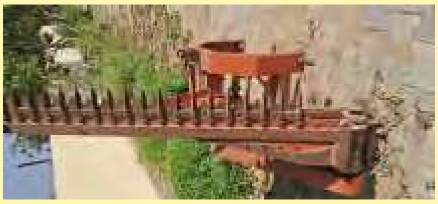
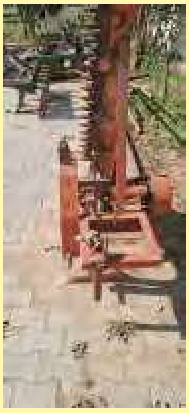

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 मई, 2025

# गोरक्षा विभाग, विहिप की अ. भा. संच बैठक पटना में सम्पन्न

– दिनेश उपाध्याय

गोरक्षा विभाग, विहिप की संच बैठक गत 10 अप्रैल को पटना में संपन्न हुई। प्रारंभ में गोमाता की आरती श्री त्रिलोकीनाथ बागी ने संपन्न कराई, तदुपरान्त गोपूजन मंचासीन पदाधिकारियों के द्वारा किया गया। इस अवसर पर भा.गो.र.सं. परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी और गोरक्षा विभाग के संरक्षक मा. हुकुमचंदजी सावला तथा गोरक्षा विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख मा. दीनेश उपाध्याय जी का उद्‌बोधन हुआ। विहिप के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आर.एन. सिंह, गोरक्षा विभाग के पालक मा. स्थाणुमलयन जी, मा. हुकुमचंद जी सावला, मा. दिनेश उपाध्याय जी और प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन श्री रवीन्द्र राणा, प्रान्त मंत्री द्वारा किया गया। बैठक में निम्नांकित बिंदुओं पर निर्णय लिया गया :–

01. प्रान्त, जिला, प्रखण्ड, ग्राम टोली के विस्तार की योजना।
02. प्रान्त में एक आदर्श गौशाला एवं दस आदर्श गांव बनाने की योजना।
03. **गोसम्पदा** का मासिक विस्तार, मासिक विज्ञापन में सहयोग।
04. संघ की गोसेवा गतिविधि एवं विहिप के गोरक्षा विभाग का हर स्तर पर समन्वय हो।
05. जिलाशः **किसान सम्मेलन, गोभक्त युवा सम्मेलन, मातृशक्ति सम्मेलन** हो।
06. हर माह ग्राम में गोपूजन के कार्यक्रम हों।
07. पंच परिवर्तन का प्रचार–प्रसार स्वदेशी, समरसता, कुटुम्ब प्रबोधन, पर्यावरण एवं नागरिक कर्तव्य।
08. आगामी वर्ष में अखिल भारतीय गोभक्त महिलाओं की बैठक दिल्ली में होगी। तिथि की जानकारी बाद में दी जायेगी।
09. क्षेत्र में एक अनुसंधान केन्द्र पर विशेष ध्यान – 1. गुवाहाटी, 2. पूर्णिया, उत्तर बिहार, 3. हरियाणा, 4. हटा, महाकौशल 5. कोंकण, 6. भाग्यनगर, क्षेत्रों को प्राथमिकता देना।
10. अनुसंधान की टोली में 1. मा. हुकुमचन्द सावला जी (संरक्षक) 2. मा. गुरू प्रसाद सिंह जी 3. मा. श्रीनारायण अग्रवाल जी 4. मा. केशवराजू जी 5. मा. सुनील मानसिंहका जी शामिल रहेंगे।
11. माननीय श्रीनारायण जी अग्रवाल जी को भारतीय गोवंश रक्षण–संवर्द्धन परिषद के अखिल भारतीय महामंत्री बनाये जाने की घोषणा मा. स्थाणुमलयन जी ने की।
12. 9 अप्रैल, 2025 को स्थानीय गोभक्त एवं गोप्रेमी नागरिकों की गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें माननीय हुकुमचन्द जी सावला एवं प्रो. गुरु प्रसाद सिंह जी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक – देवेन्द्र नायक